हरिशंकर परसाई के साहित्य में सामाजिक व्यंग्य–एक अध्ययन

अरुण विट्ठल कांबळे

शोध छात्र

शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापूर, हिंदी विभाग

9421125357

Email – avbanpurikar@gmail.com

प्रस्तावना

व्यंग्य साहित्य की एक विधा है । यह विधा हरिशंकर परसाई जी ने साहित्य में बडे प्रभाव के साथ लाई है । यह विधा साहित्य में उपहास, मज़ाक से प्रभावित हो जाती है । यूरोप में डिवाइन कॉमेडी, दांते की लैटिन में लिखी किताब को मध्यकालीन व्यंग्य का महत्वपूर्ण कार्य माना गया है । तत्कालीन व्यवस्था का मज़ाक उड़ाकर लोगों को जागृत करना यह कार्य इस विधा के माध्यम से किया गया था । हिन्दी में हरिशंकर परसाई और श्रीलाल शुक्ल ने इस विधा के विविध आयाम दिए है । ऐसा माना जाता है की व्यंग्य 16वीं शताब्दी की शुरुआत में अंग्रेजी में आया था ।

आमतौर पर हास्य, विडम्बना, कटाक्ष, व्यंग्य, हाजिरजवाबी का मतलब अभिव्यक्ति का एक ऐसा तरीका है जिसका उद्देश्य मनोरंजन से समाज को जागृत कराना है । एक साहित्यिक कृति जो मानवीय बुराइयों और मूर्खताओं को उपहास या तिरस्कार के लिए प्रस्तुत करती है । इसका प्रयोग तीक्ष्ण बुद्धि, व्यंग्य या कटाक्ष का उपयोग व्यवस्था में दिखाई देने वाली बुराईयों या मूर्खता को उजागर करने के लिए किया जाता है । आम आदमी को व्यवस्था से झगडते समय जो परेशानियाँ होती है । उनको खुले तौर पर तो व्यक्त नहीं कर सकता, लेकिन इसी बात को वह व्यंग्य शैली के माध्यम से समाज के सामने बिना डरे ला सकता है । इस प्रकार आम आदमी भी व्यंग्य के माध्यम से व्यवस्था की आँखें खोलने में सफल हो सकता है और जब वह व्यवस्था की आँखें खोलता है तो उसके मन को सुकुन मिलता है । यही बात

साहित्य के तौर पर भ्रष्ट व्यवस्था की पोलखोल करने में उपयोगी है । इसलिए हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य साहित्य का अध्ययन करना महत्वपूर्ण बना है ।

हरिशंकर परसाई:

हरिशंकर परसाई का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी गाँव में हुआ था । प्रारंभिक शिक्षा गाँव में होने के बाद उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. किया । कुछ सालों तक उन्होने अध्यापन किया । सन 1947 से वे लेखन कार्य में जुट गए । जबलपुर से 'वसुधा' नामक साहित्यिक पत्रिका निकाली । वे अपने सामने एक तरफ स्वाधीन भारत की विकास–यात्रा को देख रहे थे । वहीं राजनीति और समाज के उस नैतिक पराभव से भी वे वाकिफ हो रहे थे जो स्वाधीनता पूर्व की उम्मीदों के विपरीत थी और एक नए खतरे के तौर पर सामने आ रही थी ।

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य में सामाजिक भावना :

हरिशंकर परसाई हिंदी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया । व्यंग्य को हल्के–फुल्के मनोरंजन से समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा । उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी के साथ सामाजिक वास्तविकताओं को भी सामने रखने में सक्षम है । राजनैतिक व्यवस्था में पिडीत हो रहे सामान्य जनता के मन को उन्होंने बहुत ही निकटता से पकड़कर व्यंग्य से जोड दिया है । सामाजिक समस्या के साथ परंपराओ को सामान्य लोगों के जीवन–मूल्यों से जोडने की उनकी एक अलग भाषा शैली नजर आती है । जिसमे अपनापन दिखाई देता है । "ठिठुरता हुआ गणतंत्र" की रचना हरिशंकर परसाई ने की है जो एक व्यंग्य शैली में लिखा है ।

आसपास की व्यवस्था में नजर आती खोखली राजनीतिक और सामाजिक स्थिती को हरिशंकर परसाई ने बहुत ही करीब से पकड़कर उन्हें अपने शब्दों की जाल में फँसाया है । उनकी रचनाओं से – 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'आवारा भीड़ के खतरे', 'एक गोभक्त से भेंट' – हमें व्यंगो की पहचान होती है ।

हरिशंकर परसाई कहते है, "सामाजिक अनुभव के बिना सच्चा और वास्तविक साहित्य लिखा ही नहीं जा सकता ।" सामाजिक बुराईयो के प्रति गहरा सरोकार रखने वाला ही लेखक सच्चा व्यंग्यकार हो सकता है और परसाई जी इसमें खरे उतरे है ।

हरिशंकर परसाई की रचनाओं को पढ़कर महसूस होता है कि हमारा समाज, जिसे आज हम क्रूर और उन्मादी का विशेषण देते हैं ।

हरिशंकर परसाई के लिखे कुछ व्यंगों को पढकर हमें पता चलता है की उनकी कलम की धार कैसे नुकीली है ।–

१) 'अगर चाहते हो कि कोई तुम्हें हमेशा याद रखे, तो उसके दिल में प्यार पैदा करने का झंझट न उठाओ । उसका कोई स्केंडल मुट्ठी में रखो । वह सपने में भी प्रेमिका के बाद तुम्हारा चेहरा देखेगा ।'

२) ' सफेदी की आड़ में हम बूढ़े वह सब कर सकते हैं, जिसे करने की तुम जवानों की भी हिम्मत नहीं होती । '

३) 'इस कौम की आदी ताकत लड़कियों की शादी करने में जा रही है । '

४) ' बेइज़्ज़ती में अगर दूसरे को भी शामिल कर लो तो आदी इज़्ज़त बच जाती है । '

५) 'जो कौम भूखी मारे जाने पर सिनेमा में जाकर बैठ जाये, वह अपने दिन कैसे बदलेगी?'

६) 'अमरीकी शासक हमले को सभ्यता का प्रसार कहते हैं. बम बरसते हैं तो मरने वाले सोचते हैं, सभ्यता बरस रही है ।'

७) 'जनता जब आर्थिक न्याय की माँग करती है, तब उसे किसी दूसरी चीज में उलझा देना चाहिए, नहीं तो वह खतरनाक हो जाती है । जनता कहती है हमारी माँग है महँगाई बंद हो, मुनाफाखोरी बंद हो, वेतन बढ़े, शोषण बंद हो, आर्थिक क्रांति की तरफ बढ़ती जनता को हम रास्ते में ही गाय के खूंटे से बांध देते हैं । यह आंदोलन जनता को उलझाए रखने के लिए है ।'

८) 'स्वतंत्रता–दिवस भी तो भरी बरसात में होता है, अंग्रेज बहुत चालाक हैं । भरी बरसात में स्वतंत्र करके चले गए । उस कपटी प्रेमी की तरह भागे, जो प्रेमिका का छाता भी ले जाए । वह बेचारी भीगती बस–स्टैंड जाती है, तो उसे प्रेमी की नहीं, छाता–चोर की याद सताती है । स्वतंत्रता–दिवस भीगता है और गणतंत्र–दिवस ठिठुरता है ।'

एक और उदाहरण से उनकी व्यंग्यता चिरंतर किस प्रकार है इसका पता चलता है । गाय पर हो रही राजनीति पर परसाई ने तब लिखा था– 'इस देश में गौरक्षा का जुलूस सात लाख का होता है, मनुष्य रक्षा का मुश्किल से एक लाख का । उन्होंने यह भी लिखा कि, 'अर्थशास्त्र जब धर्मशास्त्र के ऊपर चढ़ बैठता है तो गौरक्षा आंदोलन का नेता जूतों की दुकान खोल लेता है ।' आज के वक्त में तब के परसाई के इस व्यंग्य को समझने के बाद तो पता चलेगा कि तब के परसाई भारतीय समाज के सचमूच अरस्तु थे । शायद हरिशंकर परसाई उसी समय यह देख चुके थे कि आने वाले समय में भारत की दशा क्या और कैसी होगी।

उनका व्यंग्य संग्रह 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए 1982 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।

निष्कर्ष:

हरिशंकर परसाई हिंदी के महत्वपूर्ण व्यंग्यकार है । उन्होने अपने साहित्य में व्यंग्य का प्रयोग सामाजिक कलुष को मिटाने के लिये किया । उन्होंने अपने साहित्य में इंसान की मुक्ति और सामाजिक परिवर्तन का व्यंग्य से घनिष्ठ संबंध है इस बात को समाज के सामने रखा है । हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य के माध्यम से समाज को आयना दिखाया है ।

सामाजिक विसंगतियो के प्रति गहरा सरोकार रखने वाला ही लेखक सच्चा व्यंग्यकार हो सकता है । हरीशंकर परसाई ने इसे प्रमाणित कर के दिखाया है । समाज के हर व्यंग्य की स्थिति पर उन्होंने प्रकाश डाला है ।

परसाई का साहित्य हमें ये मानने पर विवश कर देता है की व्यंग्य को समझने के लिए हमें कितना चैतन्य और मानवीय होना पड़ेगा जिन चीज़ों को हम ख्वाब की तरह भूलते जा रहे हैं । परसाई हमेशा एक मुस्कान के रूप में हम में ज़िंदा रहेंगे जो हमें खुद पर आएगी, और इस बात को याद कराएगी की बदलाव और सुधार की नीव हमें खुद पर रखनी होगी ।

परसाई का साहित्य पढ़ते हुए महसूस होता है कि वो तब जिन मुद्दों पर लिख रहे थे, आज भी हम उन्हीं मुद्दों से घिरे हैं और लगातार उन्हीं मुद्दों के दलदल में और अन्दर तक धंसते चले जा रहे हैं । परसाई को पढ़ते हुए हमें यह भी महसूस होता है की आज भी हमारे मन में जो स्वाभाविक प्रश्न उठते हैं जो हमारे भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्य से आज भी अभिन्न रूप से जुड़े हैं ।

संदर्भ:

1) इंटरनेट स्त्रोत

2) NEWS18 HINDI–AUGUST 22, 2019,

3) जनचौक –संस्कृति–समाज, शैलेंद्र चौहान, August 22, 2023 https://www.janchowk.com